चलो कछुए पालें

मिलिसेंट सेल्सम

चित्र : अर्नोल्ड लोबेल

चलो कछुए पालें

मिलिसेंट सेल्समन

चित्र : अर्नोल्ड लोबेल

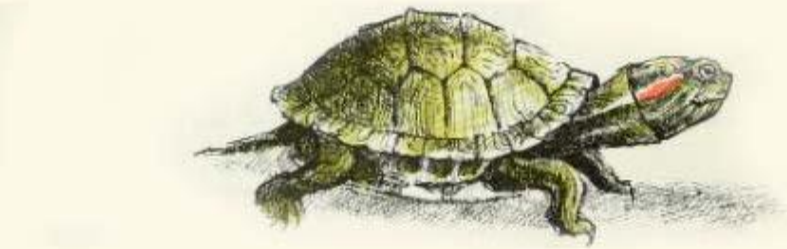

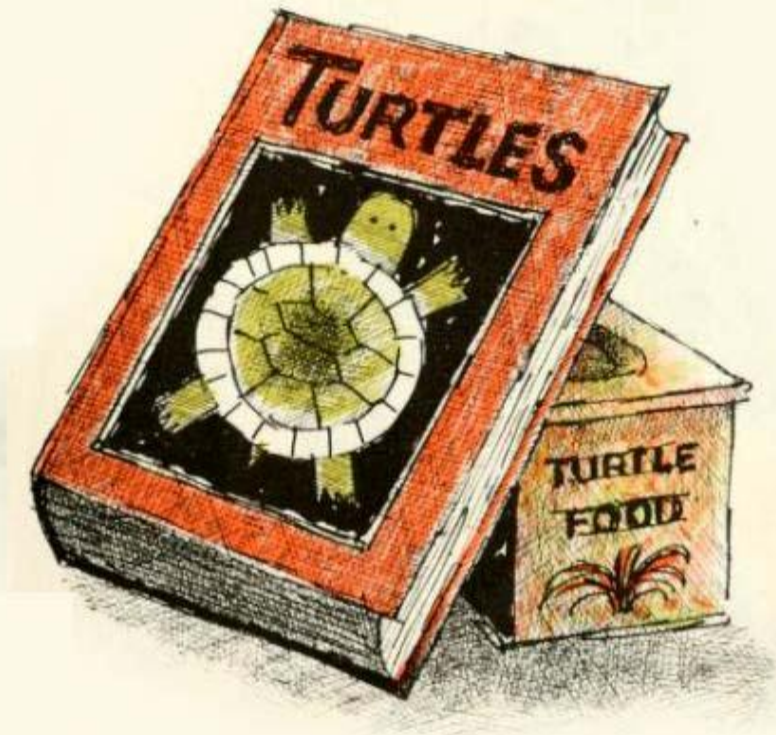

"क्या कछुए पालतू होते हैं," जेरी ने पूछा .

"हां, वो पालतू होते हैं," बिली ने कहा.

"नहीं, वो पालतू नहीं होते है," जेरी ने कहा.

"मुझे एक पालतू जानवर चाहिए जो मेरे घर आने पर अपनी पूंछ हिलाए."

"मेरी माँ मुझे कुत्ता पालने नहीं देंगी," बिली ने कहा.

"तो क्या हुआ?" जेरी ने कहा.

"मुझे लगता है मेरी माँ मुझे उसकी इज़ाज़त देंगी."

"देखो, जेरी," बिली ने कहा, "हम दोनों दोस्त हैं?"

"हाँ," जेरी ने कहा.

"ठीक," बिली ने कहा.

"चलो कुछ पालतू जानवर लाते है."

"चलो कछुए लाते हैं."

"कछुए क्यों?" जेरी ने पूछा.

“देखो, कछुए भूंकते नहीं हैं," बिली ने कहा.

"नही," जेरी ने कहा.

"लेकिन वे अपनी पूंछ भी नहीं हिलाते हैं," बिली ने सोचा.

फिर उसने कहा, "कछुए ज्यादा जगह भी नहीं घेरते हैं. और उनकी कीमत भी कुत्ते से सस्ती होती है."

"नहीं," जेरी ने कहा.

"लेकिन मछली भी ज्यादा जगह नहीं घेरती है और उसकी कीमत भी ज्यादा नहीं होती है."

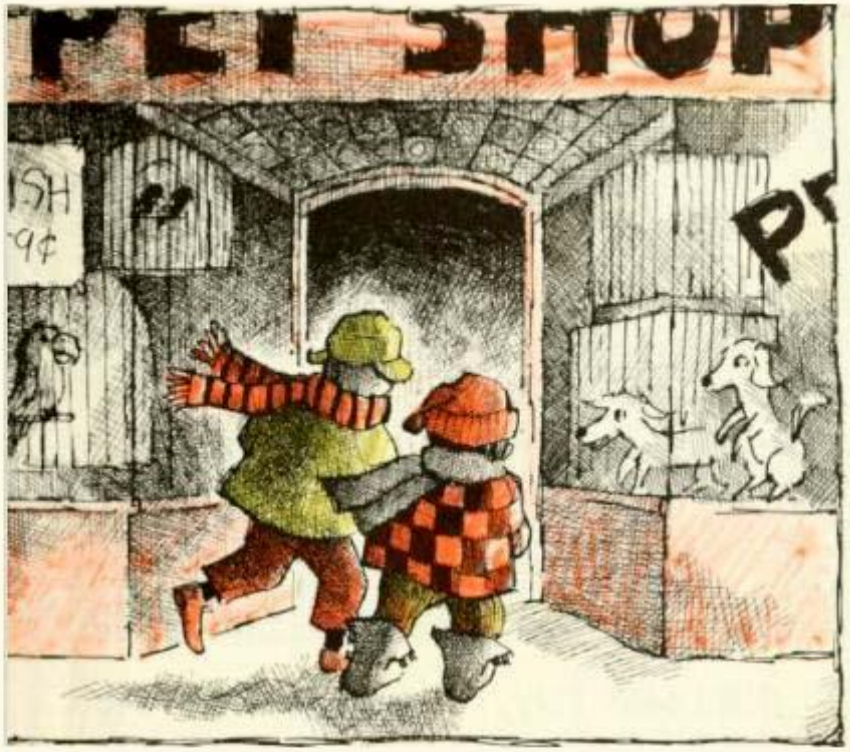

"लेकिन मेरे पास पहले से ही एक सुनहरी मछली है," बिली ने कहा.

"चलो कछुओं को देखने के लिए पालतू जानवरों की दुकान पर चलते हैं."

"ठीक है," जेरी ने कहा.

बिली और जेरी पालतू जानवरों की दुकान पर गए. उन्हें वहां कछुए मिले. कुछ छोटे हरे कछुए टैंक में एक बड़ी चट्टान पर फिसल रहे थे.

"ये किस प्रकार के कछुए हैं?" बिली ने पूछा.

"इन्हे "लाल-कान" कहते हैं," दुकान वाले आदमी ने कहा.

"इनके सिर के दोनों तरफ तुम एक लाल निशान देख सकते हो."

"वे कितने के हैं?" जेरी ने पूछा.

"हरेक पचास सेंट का," पालतू जानवरों की दुकान वाले आदमी ने कहा.

बिली ने कहा, "हम जल्द ही वापस आएंगे. हमारे लिए कुछ कछुओं को बचाकर रखना."

फिर बिली और जेरी घर गए.

"हम कछुओं को कहाँ रखेंगे?" जेरी ने पूछा.

"मैं अपने पुराने फिश टैंक का उपयोग कर सकता हूं," बिली ने कहा.

"मुझे उन्हें रखने के लिए कुछ खरीदना होगा," जेरी ने कहा.

अगले दिन बिली और जेरी पालतू जानवरों की दुकान पर वापस गए. बिली ने दो कछुए खरीदे. जेरी ने दो भी कछुए और एक कछुए रखने वाला कांच का मर्तबान भी खरीदा.

फिर दोनों बिली के घर गए. बिली ने मछली के टैंक को बाहर निकला. उसने उसमें एक इंच पानी डाला. फिर उसने बीच में एक बड़ा पत्थर रखा.

"यह पत्थर किसलिए है?" उसकी माँ ने पूछा.

"जिससे कछुए सूखने के लिए पत्थर पर चढ़ सकें," बिली ने कहा.

"फिर तुमने टैंक में पानी ही क्यों भरा?" माँ ने पूछा.

"मुझे नहीं पता," बिली ने कहा.

"क्योंकि पालतू जानवरों की दुकान वाले के टैंक में भी पानी भरा था."

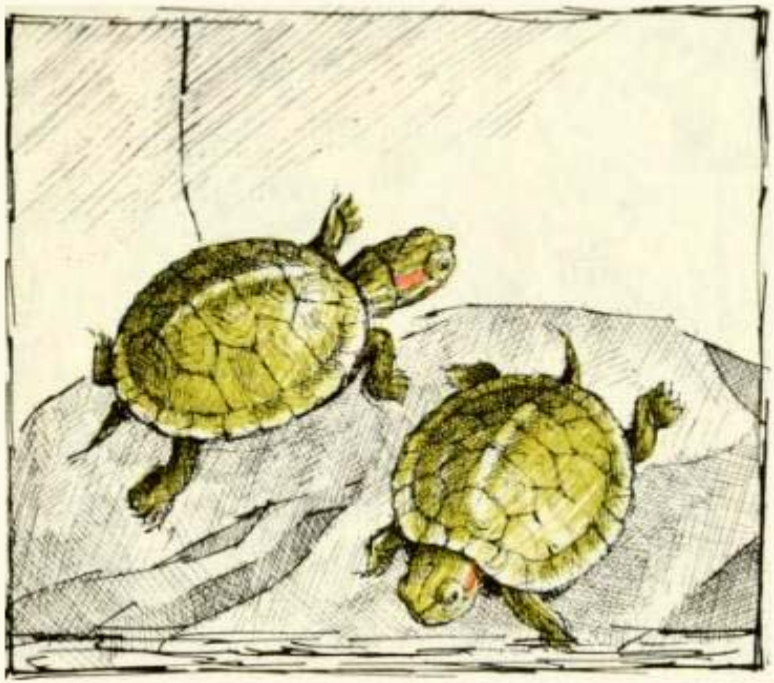

जेरी ने अपने कछुए के मर्तबान में पानी भरा और एक पत्थर रखा.

"अब हम क्या करें?" बिली ने पूछा.

"हमें पेट-स्टोर वाले से पूछना चाहिए था."

"ठीक है," जेरी ने कहा, "चलो उसकी दुकान पर वापस चलते हैं."

बिली और जेरी, पालतू जानवरों की दुकान पर वापस गए.

"हम अपने कछुओं की देखभाल कैसे करें?" बिली ने पूछा.

"मैं खुद भी कछुओं के बारे में ज्यादा नहीं जानता हूँ," दुकान वाले ने कहा.

"लेकिन यहाँ उनके बारे में एक किताब है."

"किताब कितने की है?" बिली से पूछा.

"पैंतीस सेंट की," दुकान वाले ने कहा.

"मुझे किताब भी दें," बिली ने कहा.

"हाँ, मेरे पास कछुओं का खाना भी है," आदमी ने कहा.

"वो कितने का है?" बिली ने पूछा.

"पच्चीस सेंट का."

"मैं एक बॉक्स लूंगा," बिली ने कहा.

"मैं भी," जेरी ने कहा.

"उन्हें अभी एकदम मत खिलाना, उसके लिए कुछ दिन रुकना," दुकानदार ने कहा.

"पहले उन्हें नए टैंक का अभ्यस्त होने देना. हाँ, हर कुछ दिनों में पानी ज़रूर बदलना."

बिली और जेरी, बिली के घर गए.

"मुझे किताब दो," जेरी ने कहा.

"जिससे मैं कछुओं के भोजन के बारे में पढ़ सकूं," बिली ने कहा.

"ठीक है," जेरी ने कहा. "यह लो."

कछुए क्या खाते हैं

कुछ कछुए छोटे-छोटे जानवर खाते हैं.

कुछ कछुए जानवर और पौधे खाते हैं.

कुछ कछुए केवल पौधे खाते हैं.

"लाल-कान वाले कछुओं के बारे में क्या लिखा है?" बिली ने पूछा.

जेरी ने किताब में देखा.

"लाल-कान, लाल-कान ... देखो यह रहा. लाल कान वाले कछुए ज़्यादातर पानी के नीचे ही खाना खाते हैं."

"इसीलिए उन्हें पानी के टैंक में ही रखना चाहिए," बिली ने कहा.

जेरी ने पढ़ा. "लाल कान वाले कछुए कीड़े, मांस, झींगा, फल और सब्ज़ियां खाते हैं."

"फिर डिब्बे में बंद कछुओं के भोजन के बारे में क्या?" बिली ने पूछा.

"यहाँ उसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा है," जेरी ने कहा.

"ठीक है, पर क्योंकि डिब्बे पर कछुआ-भोजन लिखा है, इसलिए कछुए उसे अवश्य ही खाएंगे," बिली ने कहा.

"हम कोशिश करके देख सकते हैं." जेरी ने कहा.

जब बिली के पिता घर आए, तब बिली ने उन्हें अपने कछुए दिखाए.

"ठीक है," पिताजी ने कहा, "जब मैं छोटा था तब मैं भी कछुए पाला करता था."

"क्या आपको उनकी देखभाल करना पता है?" बिली ने पूछा.

"हाँ, मैं कुछ बातें ज़रूर जानता हूँ," पिताजी ने कहा.

"इनमें से अधिकांश पालतू कछुए दक्षिण में गर्म स्थानों से आते हैं. टैंक में पानी गर्म होना चाहिए. कछुओं का खून उतना ही गर्म या ठंडा होता है जितना पानी होता है."

"जब मैं पानी में जाता हूं, तो क्या मेरा खून भी पानी जितना ही ठंडा हो जाता है?" बिली ने पूछा.

"तुम करके देखो और पता लगाओ," पिताजी ने सुझाव दिया.

"नहाते समय तुम इसे आज़माना."

"मैं अभी नहाकर देखूँगा," बिली ने कहा.

फिर पिताजी दो थर्मामीटर लेकर आए.

उन्होंने लंबे वाले थर्मामीटर को पानी में डाल दिया.

"पानी कितनी ठंडा है?" उन्होंने बिली से पूछा.

"काफी ठंडा है!" बिली ने कहा.

"तुम नंबरों के पास वाली लाल लाइन को देखो," पिताजी ने कहा.

"मुझे लगता है कि वो 80 के पास है," बिली ने कहा.

"ठीक है," पिताजी ने कहा.

"पानी का तापमान 80 डिग्री है. अब इस थर्मामीटर को अपने मुंह में लगाओ."

"मेरा बुखार जांचने के लिए माँ इसी का तो उपयोग करती हैं," बिली ने कहा.

उसने थर्मामीटर अपने मुंह में डाला.

"कुछ मिनट चुप रहो," पिताजी ने कहा.

तीन मिनट बाद बिली के पिताजी ने थर्मामीटर को पढ़ा.

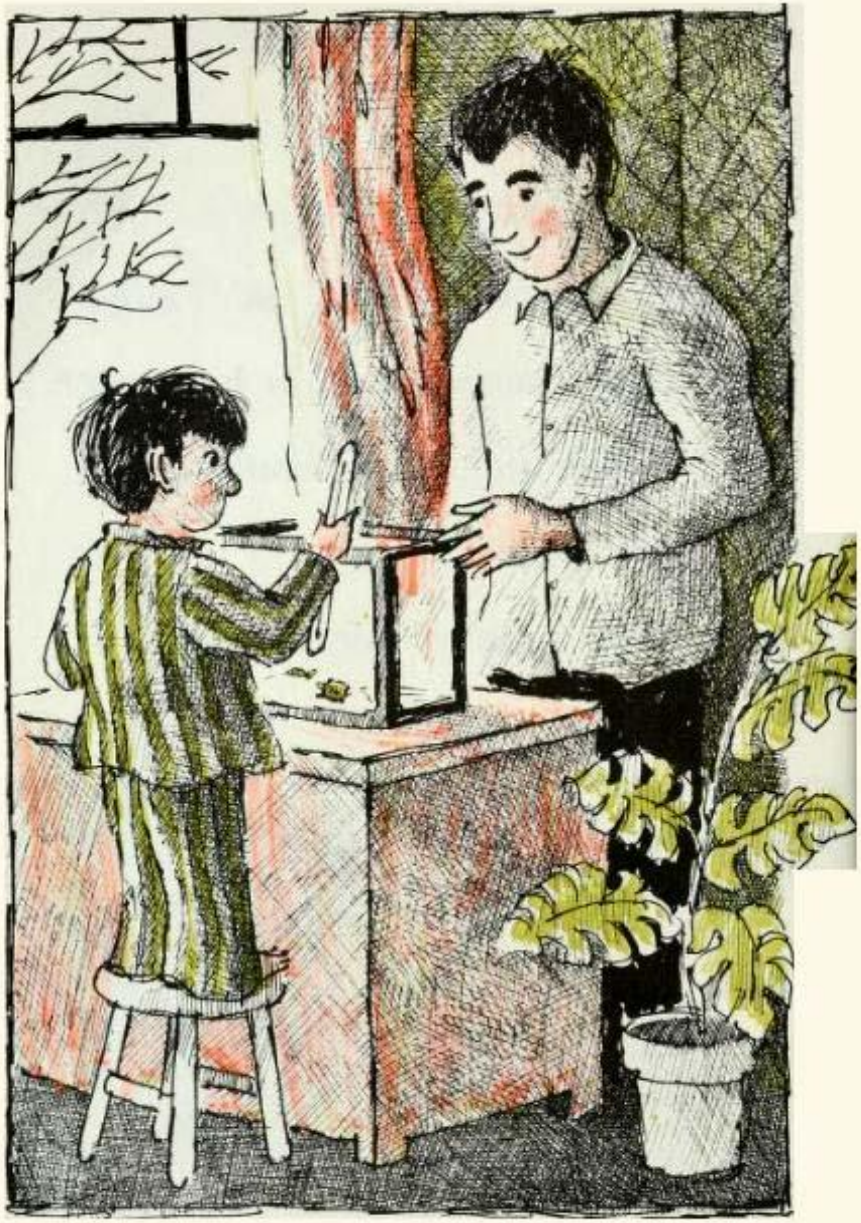

"थर्मामीटर 98.6 दिखा रहा है," उन्होंने कहा.

"यह सामान्य तापमान है," बिली ने कहा.

"हाँ," पिताजी ने कहा.

"अगर तुम्हें बुखार न हो तो यही तुम्हारा तापमान होगा."

"और पानी का तापमान सिर्फ 80 है," बिली ने कहा.

"इसलिए मैं पानी से ज्यादा गर्म हूँ."

बाद में बिली और उसके पिता टैंक के पास गए. बिली ने लम्बा थर्मामीटर टैंक के पानी में लगाया. फिर उसने थर्मामीटर की लाल लाइन को देखा.

"70," उसने कहा.

"क्या अब मैं कछुओं का तापमान माप सकता हूँ?"

"उसके लिए हमारे पास सही प्रकार का थर्मामीटर नहीं है," पिताजी ने कहा.

"मेरी बात मानों, कछुओं का तापमान भी लगभग 70 डिग्री ही होगा. दिन के दौरान इन कछुओं के लिए पानी का तापमान 75 और 85 के बीच होना चाहिए. और रात में तापमान 65 से कम नहीं होना चाहिए."

"मैं तापमान इस तरह कैसे बनाए रख सकता हूँ?" बिली ने पूछा.

"बचपन मैं मैंने यह कैसे किया वो मैं भूल गया हूँ," पिताजी ने कहा.

सुबह बिली टैंक के पास गया.

बिली ने थर्मामीटर को देखा.

"65!" उसने कहा.

"इसलिए कछुओं का तापमान भी 65 ही होना चाहिए."

दोपहर के भोजन के बाद बिली ने फिर थर्मामीटर की ओर देखा.

"70," उसने कहा.

"वो पर्याप्त गर्म नहीं है."

बिली जेरी से मिलने गया. वो अपने साथ थर्मामीटर लेकर गया.

"तुम्हारे कछुए कैसे हैं?" बिली ने पूछा.

"मुझे तो ठीक ही लग रहे हैं," जेरी ने कहा.

जेरी का कछुओं का मर्तबान खिड़की की चौखट पर रखा था.

सूर्य चमक रहा था.

"क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे कछुए कितने गर्म हैं?" बिली ने पूछा.

"नहीं क्या तुम्हें पता है?" जेरी ने पूछा.

बिली ने अपनी जेब से थर्मामीटर निकाला और उसने उसे पानी में डाला.

"90!" उसने कहा.

"तुम्हारे कछुए लगभग तुम्हारे जितने ही गर्म होंगे."

"मैं कितना गर्म हूँ?" जेरी ने पूछा.

"जब तक तुम बीमार न हो तब तक तुम्हारा तापमान हमेशा 98.6 ही होगा."

"लेकिन कछुओं का तापमान," बिली ने कहा, "पानी के तापमान जितना ही होगा."

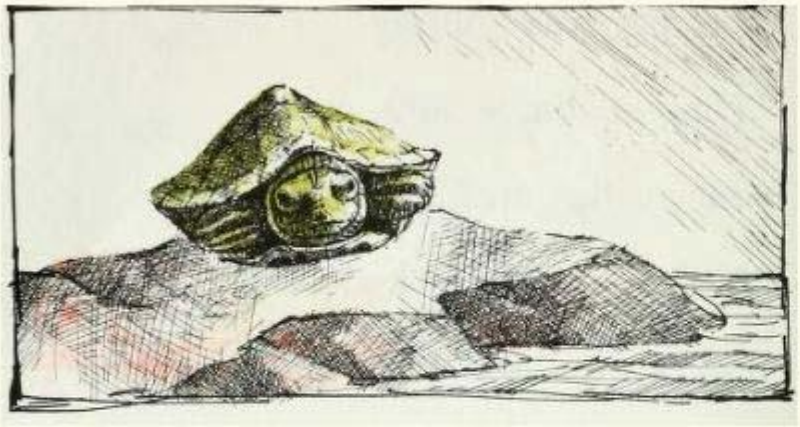

"क्या तुम्हें पता है कि आज सुबह मेरे कछुए कितने ठंडे थे? 65!"

"तुम्हें यह कैसे पता चला?" जेरी ने पूछा.

"क्योंकि पानी का तापमान 65 था," बिली ने कहा.

"और पिताजी कहते हैं कि कछुओं का तापमान पानी के समान ही होता है."

"तुमने कछुओं का तापमान क्यों नहीं लिया?" जेरी से पूछा.

"काश मैं उनका तापमान ले पाता," बिली ने कहा.

"लेकिन हमारे पास सही थर्मामीटर नहीं था."

"वैसे तुम कछुओं का तापमान आखिर क्यों जानना चाहते हो?" जेरी ने पूछा.

"मेरे पिताजी कहते हैं कि ये कछुए गर्म स्थानों से आते हैं. इसलिए उन्हें गर्म रखा जाना चाहिए," बिली ने कहा.

"मेरे कछुए गर्म हैं," जेरी ने कहा.

"उनका तापमान अब 90 हैं."

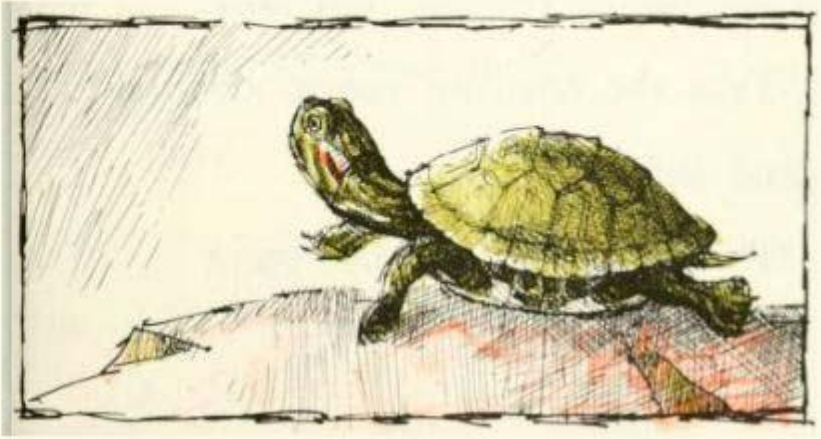

"वो बहुत गर्म है," बिली ने कहा.

"सूरज पानी को बहुत गर्म कर रहा है. लेकिन आज रात क्या होता है, देखना."

"ठीक है," जेरी ने कहा.

"अपना थर्मामीटर यहीं छोड़ जाओ."

अगली सुबह जेरी ने थर्मामीटर को देखा.

"55!" वो चिल्लाया.

उसने बिली को टेलीफोन किया.

"मेरे कछुए अब बहुत ठंडे हैं," उसने कहा.

"कछुए के मर्तबान को खिड़की की चौखट पर रखो," बिली ने कहा.

"दिन में वहां पानी काफी गर्म हो जायेगा."

“और रात में बहुत ठंड होगी."

"ठीक है. मैं उनकी जगह बदल दूंगा," जेरी ने कहा.

"लेकिन क्या तुम्हारे कछुए सही तापमान पर हैं?"

"नहीं" बिली ने कहा.

"पानी का तापमान रात में घटकर 65 हो जाता है. वो ठीक है. लेकिन वो दिन में केवल 70 तक जाता है. और पानी बहुत ठंडा होता है. पानी का तापमान 75 और 85 के बीच होना चाहिए."

"तुम्हें कैसे पता कि पानी का तापमान क्या होना चाहिए?" जेरी ने पूछा.

"मेरे पिताजी ने मुझे बताया," बिली ने कहा.

"लेकिन उन्हें याद नहीं रहा कि उस तापमान को उन्होंने इस तरह कैसे बरकरार रखा ."

"चलो पालतू जानवरों की दुकान पर चलते हैं, और देखते हैं कि वो यह कैसे करते हैं," जेरी ने कहा.

बिली और जेरी पालतू जानवरों की दुकान पर गए. वहां कछुए के टैंक में एक थर्मामीटर लगा था. उसका तापमान 85 था.

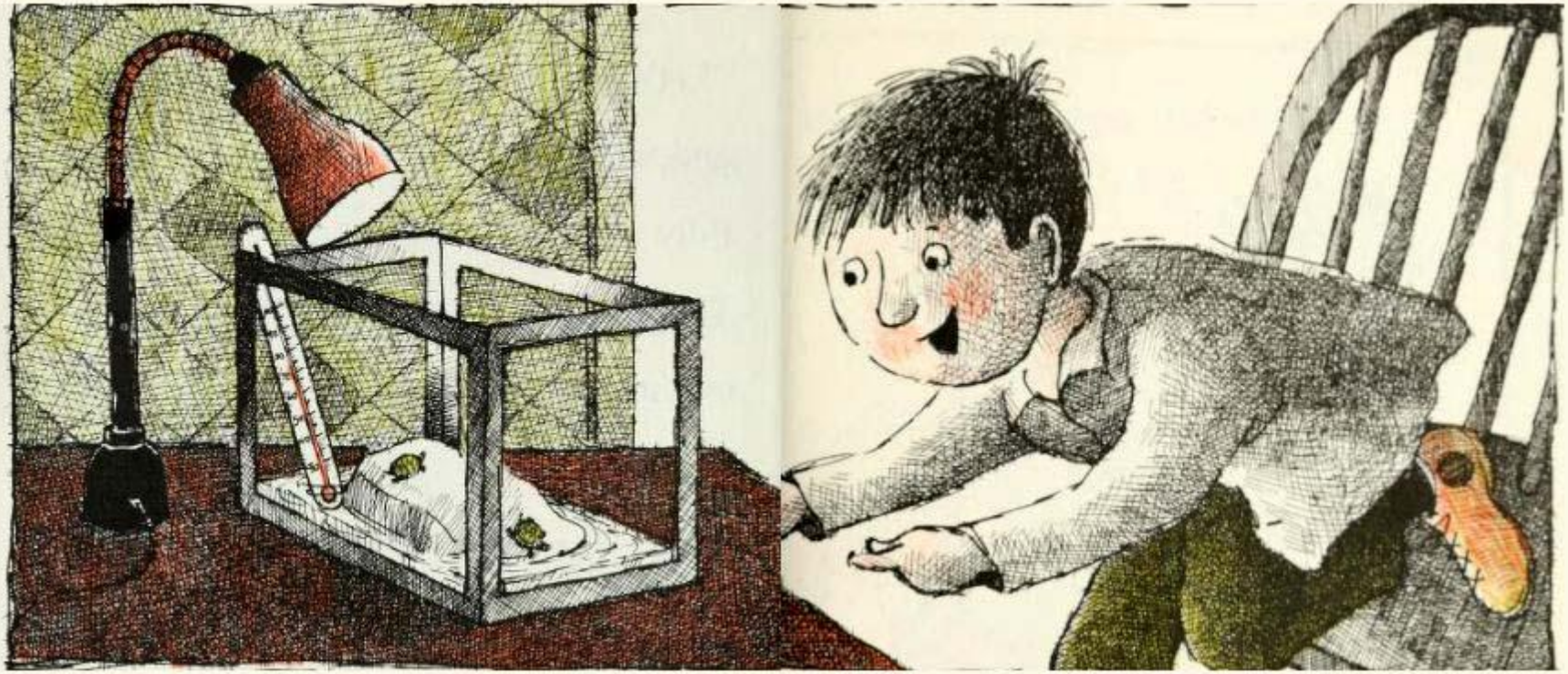

"टैंक में जो बल्ब जल रहा है वही पानी को गर्म रखता होगा," जेरी ने कहा.

"हम भी अपने कछुओं पर बल्ब का प्रकाश डाल सकते हैं."

"मैं कोशिश करूँगा," बिली ने कहा.

"मैं भी," जेरी ने कहा.

उस दोपहर बिली ने अपने टैंक के ऊपर एक लैंप रखा. उसने थर्मामीटर को पानी में डाला. बाद में उसने उसे पढ़ा.

"75! लैंप काम कर रहा है!" उसने कहा.

उसने जेरी को टेलीफोन किया.

"क्या तुम्हारे लैंप ने काम किया?" उसने पूछा.

"लगता है काम किया," जेरी ने कहा.

"मुझे पानी गर्म लगता है. लेकिन तुम अपना थर्मामीटर लाओ."

फिर बिली ने अपना थर्मामीटर लिया और वो जेरी के घर गया. उसने थर्मामीटर को कछुए के मर्तबान में डाला.

"80! तुम्हारा लैंप ठीक काम कर रहा है," उसने कहा.

"रात में हम लैंप बंद कर देंगे. लेकिन अगर घर में बहुत ठंड होगी तो फिर हम पूरी रात लैंप को जला छोड़ सकते हैं."

"बढ़िया आईडिया!" जेरी ने कहा.

अगले दिन जेरी ने बिली को फोन किया.

उसने कहा, "अब हमारे कछुए अच्छी तरह से गर्म हैं. लेकिन अब शायद उन्हें खिलाने का समय आ गया है?"

"हाँ," बिली ने कहा. "मैं कछुए को भोजन देने की कोशिश करूंगा," जेरी ने कहा.

"मैं उन्हें खिलाने की कोशिश करने जा रहा हूँ," बिली ने कहा.

जेरी ने डिब्बे से कुछ कछुआ-खाना निकाला.

उसने उसे कछुओं के मर्तबान में डाला.

पर कछुए बिल्कुल नहीं हिले.

जेरी ने एक कछुए को उठाया

उसने उसे खाने के पास रखा.

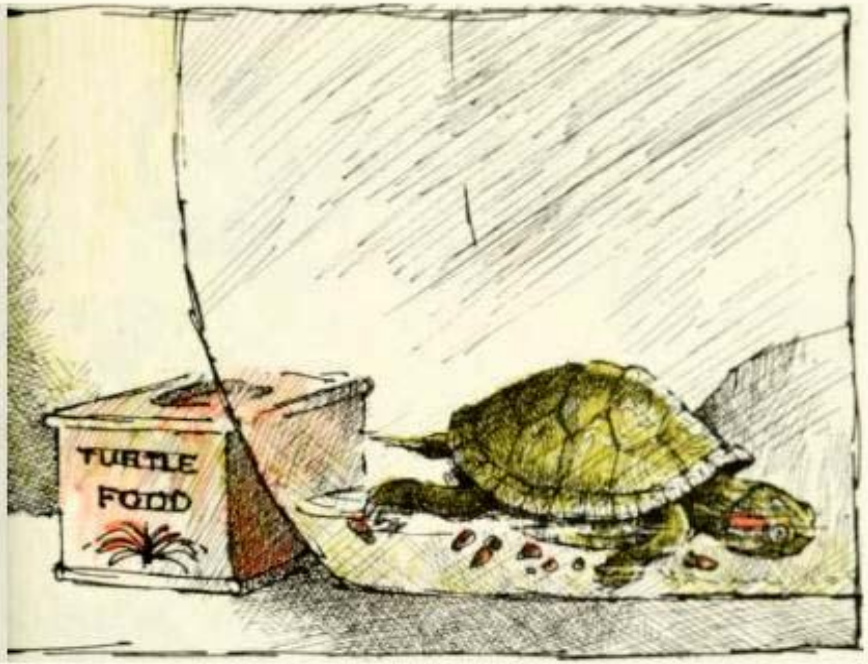

पर कछुआ खाने से दूर चला गया.

उसने दूसरे कछुए को उठाया.

उसने उसे भी खाने के पास रखा.

कछुए ने भोजन को अपने मुँह से छुआ. फिर वो दूर चला गया.

जेरी ने सोचा.

"मैं यहां पूरे दिन तो नहीं रह सकता. फिर मुझे यह कैसे पता चलेगा कि कछुओं ने भोजन खाया? ठीक है. मैं भोजन के टुकड़ों को गिनूंगा."

वहां छह टुकड़े थे.

जेरी चला गया.

वो एक घंटे बाद वापस लौटा.

वहां अभी भी छह टुकड़े ही थे.

अगले दिन भी छह ही टुकड़े थे.

यानि कछुओं ने कुछ भी नहीं खाया था.

जेरी बिली के घर गया. "क्या तुम्हारे कछुओं ने खाना खाया?"

उसने पूछा. "हाँ," बिली ने कहा.

"मुझे देखो और मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि उन्हें कैसे खिलाना है."

वो रसोई में गया और एक डबलरोटी-बन के साथ वापिस लौटा. उसने बन को टेबल के किनारे पर रख दिया.

"अब मैं एक कछुआ हूँ," उसने कहा.

"मैं पानी के नीचे आऊंगा. मैं अपने मुंह से डबलरोटी-बन को पकडूँगा. पहले एक हाथ से धक्का दूंगा. फिर मैं दूसरे हाथ से धक्का दूंगा. अब मेरे मुंह में डबलरोटी-बन का एक टुकड़ा है. मैं इसे निगलता हूँ.

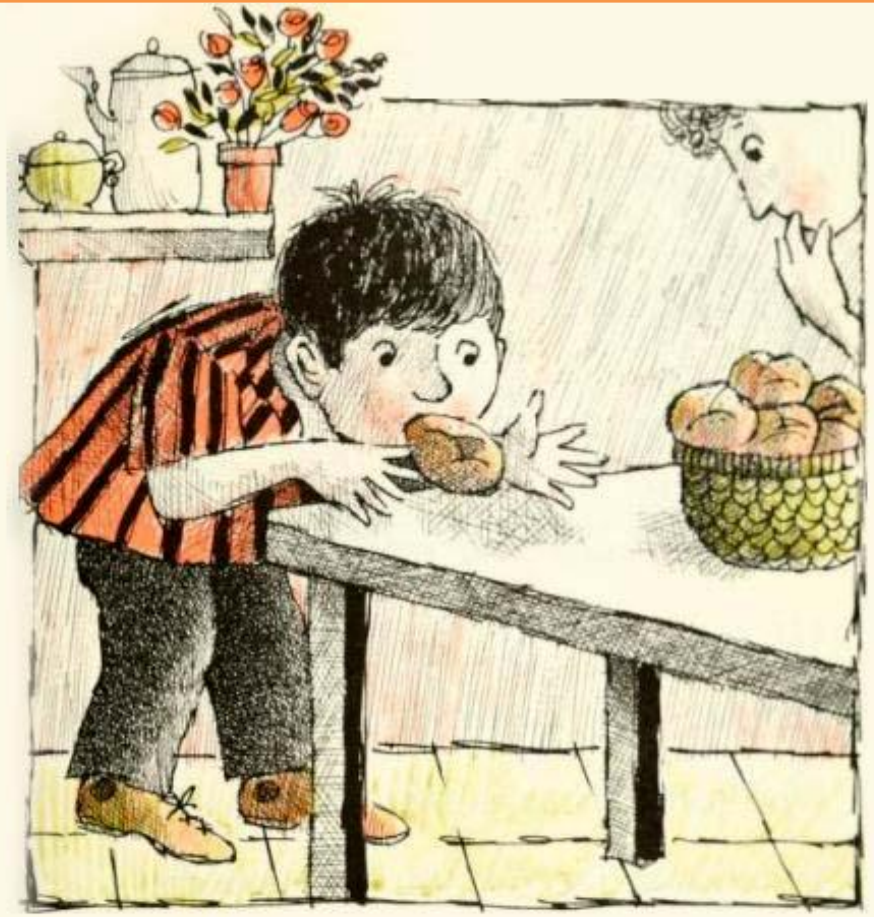

फिर मैं डबलरोटी-बन को फिर से अपने मुंह में लेता हूं. और मैं एक हाथ से धक्का देता हूं."

"रुको!" जेरी चिल्लाया.

"बस हो गया. ज़रा मेरी बात भी सुनो. मेरे कछुओं ने कुछ नहीं खाया है."

"तुम उन्हें मछली खिलाने की कोशिश करो," बिली ने कहा.

जेरी ने मछली की दुकान से कुछ मछलियाँ खरीदीं. उसने एक मछली को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा.

उसने कछुए के मर्तबान में कुछ टुकड़े डाले.

एक कछुआ तैरता हुआ आया.

उसने मछली को अपने मुँह से छुआ.

फिर वो दूर चला गया.

उसके बाद दूसरा कछुआ आया.

उसने भी मछली को अपने मुँह से छुआ.

फिर वो भी दूर चला गया.

"अब मैं क्या करूँ?" जेरी ने अपनी मां से पूछा.

"मेरे कछुए, मछली भी नहीं खा रहे हैं!"

"अच्छा, तुम पहले मछली को बाहर निकालो," माँ ने कहा. "क्योंकि अगर मछली पानी में बहुत देर तक रही तो फिर पानी में से बदबू आने लगेगी. यह बात मुझे पक्की तरह पता है."

अगले दिन जेरी ने पिसा हुआ मांस खिलाने की कोशिश की. कछुओं ने वो भी नहीं खाया.

फिर उसने केले का एक टुकड़ा खिलाने की कोशिश की. कछुओं ने उसे भी नहीं खाया.

हर बार उसने खाने को मर्तबान के बाहर निकाला. वो कछुए के मर्तबान को साफ रखना चाहता था.

लेकिन उसके कछुए कुछ नहीं खा रहे थे.

फिर जेरी, बिली से मिलने गया.

"मैं क्या करूँ. बिली?" उसने पूछा.

"मेरे कछुए कुछ खा ही नहीं रहे हैं?"

"चलो, चिड़ियाघर को टेलीफोन करते हैं," बिली ने कहा.

"चिड़ियाघर में बहुत सारे कछुए हैं. उन्हें ज़रूर पता होगा कि क्या करना चाहिए."

बिली ने माँ से चिड़ियाघर को टेलीफोन करने को कहा.

"कृपया मुझे बात करने दें," जेरी ने कहा.

"ठीक है," बिली की माँ ने कहा.

बिली की माँ ने चिड़ियाघर को फोन किया.

"क्या मैं चिड़ियाघर में किसी से बात कर सकती हूँ जो कछुओं के बारे में जानता हो?" उन्होंने पूछा.

फिर माँ ने जेरी को फोन दिया.

"हेलो," उसने कहा.

"क्या आप मुझे बता सकते हैं मेरे कछुए खाना क्यों नहीं खा रहे हैं "

फिर उसने जवाब सुना.

जब जेरी ने फोन रख दिया तो फिर बिली ने पूछा. "उन्होंने क्या कहा?"

"चिड़ियाघर वालों ने कुछ जीवित कीड़ों को आजमाने के लिए कहा," जेरी ने कहा.

"उन्होंने कहा कि उन्हें मैं पालतू जानवरों की दुकान से खरीद सकता हूं."

"तुम घर जाओ," बिली ने कहा.

"मैं एक मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा."

कुछ ही मिनटों में जेरी के दरवाजे की घंटी बजी. दरवाजे पर बिली था.

"देखो तुम्हारे लिए यह एक उपहार है," उसने कहा.

उसने एक कागज़ के कप का ढक्कन खोला. अंदर छोटे-छोटे लाल कीड़े थे.

"चलो कोशिश करते हैं," बिली ने कहा.

जेरी ने मर्तबान में कुछ कीड़े डाले. फिर जेरी और बिली वहां चुपचाप बैठ गए. एक कछुआ चल रहा था. उसकी लंबी गर्दन उसके खोल से बाहर निकली हुई थी.

वो रुका. तभी उसका मुंह खुला और झट से उसने एक कीड़ा खा लिया.

उसके बाद कछुआ वहां से चला गया.

स्नैप! वो एक और कीड़ा खा गया.

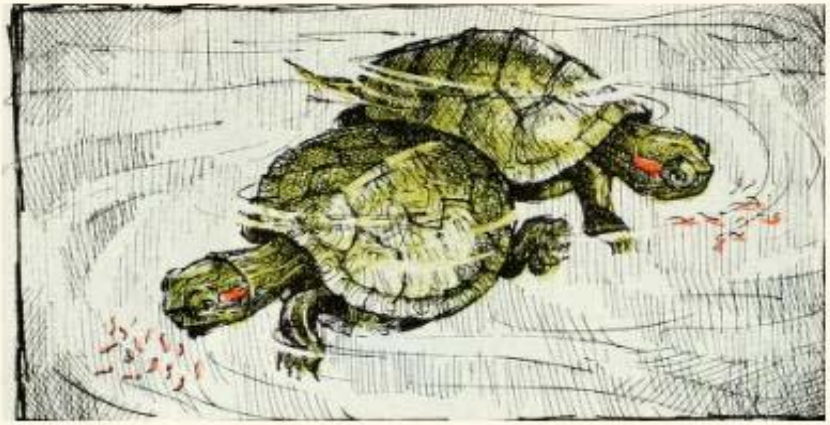

बिली और जेरी ने एक-दूसरे को देखा.

"यह काम करता है! यह काम करता है!" जेरी ख़ुशी से चिल्लाया.

"मेरी परेशानी खत्म हो गई!"

एक हफ्ते तक जेरी अपने कछुओं को कीड़े खिलाता रहा. कछुओं ने सभी कीड़ों को आराम से खाया. फिर जेरी उन्हें खाने के लिए अन्य चीजें देने लगा.

उसने उन्हें मछली दी. कीड़ों ने उसे खाया. उसने उन्हें मांस दिया. कीड़ों ने उसे भी खाया.

"अब मेरे कछुए सब कुछ खा रहे हैं!" उसने माँ से कहा.

"तुम्हें चिड़ियाघर वाले आदमी को फोन करके उसे धन्यवाद देना चाहिए," माँ ने कहा.

"कृपया आप फोन मिलाओ," जेरी ने कहा.

माँ ने तुरंत चिड़ियाघर को फोन किया.

उन्होंने कछुओं के रखवाले से बात की.

"हेलो," जेरी ने कहा. "मैं जेरी हूँ, मैंने आपसे अपने कछुओं के बारे में पूछा था? आपने मुझे उन्हें ज़िंदा कीड़े खिलाने को कहा था. उन्होंने अच्छा काम किया. अब मेरे कछुए सब कुछ खा रहे हैं."

फिर जेरी अपनी माँ की ओर मुड़ा.

"चिड़ियाघर वाले आदमी ने मुझे वहां के कछुओं को देखने के लिए बुलाया है."

"हम रविवार को वहां जाएंगे," उसकी माँ ने कहा.

"हम बिली को भी अपने साथ ले चलेंगे," जेरी ने कहा.

रविवार को बिली और जेरी चिड़ियाघर गए. उन्हें कछुए पालने वाली इमारत आसानी से मिल गई. उन्होंने कछुए के रखवाले से मिलने को कहा.

"कृपा कहें कि उनसे जेरी मिलने आया है," जेरी ने कहा.

एक आदमी बाहर आया.

"जेरी कौन है?" उसने पूछा.

"मैं हूं," जेरी ने कहा.

"और यह बिली है. उसके पास भी कछुए हैं."

"मुझे खुशी है कि अब तुम्हारे कछुए खा रहे हैं," उस आदमी ने कहा.

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ," जेरी ने कहा.

"कछुए, डिब्बे-वाला भोजन क्यों नहीं खाते?“

"कुछ कछुए डिब्बे-वाला भोजन भी खाते हैं," कछुए के रखवाले ने कहा.

"लेकिन डिब्बे वाले भोजन में ज्यादातर सूखी मक्खियाँ होती हैं. कछुओं को इससे अधिक भोजन की आवश्यकता होती है. यहाँ पर हम कछुओं के बच्चों को मछली खाने को देते हैं. मछलियों को हम छोटे-छोटे टुकड़ों में काटते हैं और फिर उन्हें पीसते हैं. उससे कछुओं का रात का अच्छा खाना बनता है. इसे हम उन्हें सप्ताह में तीन बार खिलाते हैं."

"मैं भी यही करूंगा," बिली ने कहा.

"मैं भी," जेरी ने कहा.

"और हाँ," कछुए के रखवाले ने कहा, "हम मांस में पिसी हड्डियां भी मिलाते हैं."

"वो किस लिए?" जेरी ने पूछा.

"पिसी हड्डियों से कछुओं का खोल बढ़ने में मदद मिलती है," उस आदमी ने कहा.

"हमें वो कहाँ मिलेगी?" जेरी ने पूछा.

"वो तुम्हें आसानी से मिल जाएगी," उस आदमी ने कहा.

"थोड़ा सा कॉड लिवर ऑयल भी फायदा करता है. तुम्हें पता होगा उसमें विटामिन होते हैं."

बिली और जेरी ने एक दूसरे को देखा.

फिर उस आदमी ने कहा,

"तुम कुछ मेरे लिए भी करने की कोशिश करो?"

"जेरी, तुम अपने कछुओं को रात का खाना देना. उनके मांस में एक चुटकी भर पिसी हड्डी मिलाना. बिली, तुम भी ऐसा ही करना. लेकिन सप्ताह में एक बार मांस में, कॉड लिवर ऑयल की एक बूंद ज़रूर डालना."

बिली और जेरी चुप थे.

तब बिली ने कहा, "क्या यह एक प्रयोग है?"

"हाँ," कछुओं के रखवाले ने कहा.

"फिर मुझे तुम अपने नतीजे बताना?"

एक महीने बाद जेरी ने कछुओं के रखवाले एक पत्र लिखा.

उसने लिखा :

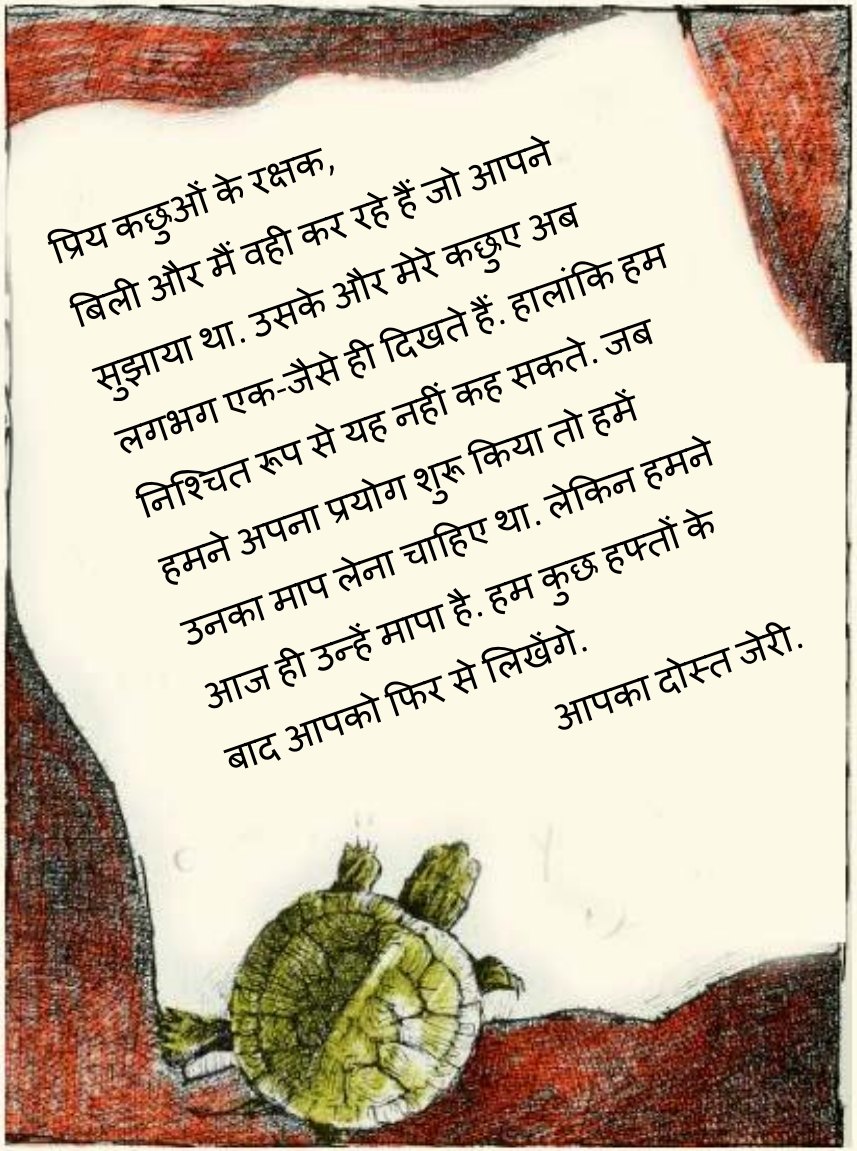
प्रिय कछुओं के रक्षक,
बिली और मैं वही कर रहे हैं जो आपने
सुझाया था. उसके और मेरे कछुए अब
लगभग एक-जैसे ही दिखते हैं. हालांकि हम
निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते. जब
हमने अपना प्रयोग शुरू किया तो हमें
उनका माप लेना चाहिए था. लेकिन हमने
आज ही उन्हें मापा है. हम कुछ हफ्तों के
बाद आपको फिर से लिखेंगे.
आपका दोस्त जेरी.

समाप्त